DJRD-4-HI

क्या यीा‍ु मुर्दों में से जी उठा? 4

अनाऊंसर: आज हम आपको बहस में न्योता देना चाहते हैं, संसार के बहुत ही विख्यात फिलोसोफर नास्तिक के साथ, डॉ. एन्थनी फ्लू, ये ऑक्स्फ़र्ड युनिवर्सिटी में प्रोफेसर थे, और मसीही फिलोसोफर और इतिहासकार डॉ. गैरी हैबरमास, लिबिर्टी युनिवर्सिटी के फिलोसोफी के डिपार्टमेंट के वर्तमान के चेअरमैन हैं/ आज का विषय है क्या यीशु मुर्दों में से जी उठा?

डॉ. गैरी हैबरमास: अब तक अच्छी बहस की कि परमेश्वर का अस्तित्व है, हमारे पास सबूत हैं कि परमेश्वर ने वचन लिखे हैं, हमारे पास सबूत हैं कि उसने समय पर काम किया है, यदि यीशु चमत्कार करता है, तो फिर वो मुर्दों में से जी उठा, और यदि आज, हम केस देखते हैं डबल ब्लाइंड एक्सपेरिमेंट, जिसके लिए मेडिकल जरनल पब्लिशर प्रार्थना का उत्तर बताते हैं, जहाँ 21 या 26 कैटगरी में किसी खास तरह से अच्छा है, उसमे से चंगाई के कुछ उदाहरण देखेंगे यदि समय है तो, मृत्यु के पास के अनुभव और फिर हम पुनरुत्थान के बारे में चर्चा करेंगे, मैं सोचता हूँ कि मसीही लोगों के हिसाब से पुनरुत्थान की बाद दूर की नही, ये बड़े चित्र का भाग है, जिसे हम थियस्टिक दृष्टिकोण कहेंगे/

मसीहियत मसीह के पुनरुत्थान पर खड़ी रखती या गिर जाती है/ यदि मसीह मुर्दों में से जी उठा है, तो मसीहियत सच्ची है, यदि वो नही जी उठा, तो मसीहियत झूठी है, यहाँ तक कि प्रेरित पौलुस ने लिखा, यदि मसीह नही जी उठा, तो हमारा विश्वास बिना बुनियाद का है, हमारा प्रचार बेकार है, और हम अब भी हमारे पापों में हैं/ हम आपको इस महत्वपूर्ण बहस में जुड़ने का न्योता देते हैं/ द जॉन एन्करबर्ग शो में/

***

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: स्वागत हैं, स्वागत है, हम संसार के दो महान फिलोसोफर से चर्चा कर रहे हैं, और मैं सोचता हूँ कि जो भी फिलोसोफी में ग्रेजुएशन कर रहा है, वो डॉ. एन्थनी फ्लू को जानते हैं, ये संसार के सबसे बड़े फिलोसोफिकल नास्तिक हैं, और डॉ. गैरी हैबरमास, ये विख्यात मसीही फिलोसोफर और इतिहासकार हैं, जिन्हें यीशु के जी उठने के सबूतों में माहिर माना जाता है/

हम इस सवाल पर चर्चा कर रहे हैं कि क्या यीशु मुर्दों में से जी उठा है? और सबूत क्या हैं? क्या कोई सबूत हैं? और एक मुख्य बात हैं दोस्तों, जिस पर चर्चा करनी चाहिए कि क्या हुआ था, इस व्यक्ति को जिसका नाम पौलुस था, जो विश्वासियों को म़ार रहा था, उसके पीछे पडा था/ ये उसके मन में भी नही था कि विश्वास करें, विश्वास करना नही चाहता था, उसने सोचा कि वो गलत हैं, और फिर अचानक वही मसीही विश्वास का महान प्रचारक हो जाता है/ अब कुछ तो हुआ था,टोनी आप बताइए कि आपको क्या लगता है कि पौलुस के साथ क्या हुआ था?

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी, इस लेखे में ऐसे दिखता है कि उसके कुछ साथी थे, वो लोग जो बाद में उसे दमिश्क में लेकर गए थे, जब वो कुछ समय के लिए नही देख पा रहा था, और उसने सोचा कि जी उठा यीशु, जो ख्रीस्त है, मसीहा है, उसने उसे देखा है, और मसीहा ने उससे बातें की, लेकिन उसके साथियों ने निश्चय ही, कुछ सुना,

कुछ लेख बताते हैं कि आवाज़ सुनी, और कुछ नही बताते,लेकिन उन्होंने निश्चिय ही नही कहा, कि कुछ देखा जिसे धक्का दे सके, किसी तरह की सामान्य या किसी तरह की अजीब मनुष्य की देह को/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, गैरी आप अपने दोस्त से क्या कहेंगे?

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, फिर से, पौलुस की मुख्य समस्या यही है, वो सही है, डेटा के हिस्सा से देखे तो पौलुस ही खुद कईबार, पहला कुरिन्थियो 9:1, पहला कुरिन्थियो15:8, गलातियों 1, वो कहता है कि उसने यीशु को देखा/ लेकिन देखिए मुझे नही लगता कि ये कैन्ट की थेयरी के लिए कोई व्यक्ति है, ये व्यक्ति नहीं है, बदलाव के दिमागी झटके के लिए, क्योंकि मैंने कहा है, बदलाव का दिमागी झटके में भ्रम नही होता है/ याने यदि पौलुस को बदलवा का दिमागी झटका नही लगा, नंबर दो आवाज़ का भ्रम, क्योंकि उसने सोचा कि आवाज़ सुनी है/ तीन, दृश्य का भ्रम, चौथा है, मसीहा काम्प्लेक्स, अजीब से दर्शन देखना, कहा जाए तो, क्योंकि उसने विश्वास किया कि परमेश्वर ने उससे बातें की और सारे संसार के लिए संदेश दिया है/ और पांचवी बात कि कोई सबूत नही है, पौलुस के लेखे में कि वो बदलाव के मुड में था/ वो क्यों बदलना चाहेगा?

तो मुझे लगता है, कि यहाँ 4 सयकोलोजिक्ल समस्याएँ हैं, और फिर बाइबल की समस्या है, पौलुस के लेख से/ मैं सोचता हूँ कि आप कैन्ट के बदलाव के दिमागी बात को कैसे बदलेंगे, आपकी थेयरी, आप कैसे बदलेंगे या कैसे जोड़ेंगे, चलिए कहते हैं, बदलाव के दिमागी बात को, दृश्य भ्रम से, और आवाज़ के भ्रम से, और मसीहा के आने के दर्शन के साथ, ये सब एक साथ हुआ/

देखिए बहुत बार मैं नेचरलिस्टिक या और कोई विवरण नही देना चाहता हूँ, मैं जानना चाहता हूँ कि यहाँ कौनसा फिनोमिना है/

डॉ. गैरी हैबरमास: लेकिन ये नैचरलिस्टिक थेयरी है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: खैर ये हो सकती है, शायद इसमें कुछ गलत हो सकता है, मैं नही कहता कि मैं सयकोलोजिक्ल एक्सपर्ट हूँ, जिसे इस तरह की दिमागी बातें पता हो, देखिए मैंने विलियम जेम्स और दूसरों को पढ़ा था/

डॉ. गैरी हैबरमास: ये केन्ट के दो पॉइंट में से एक है, मैं ये कह रहा हूँ कि ये मिलता भी नही, यदि उसे बदलाव का झटका भी लगता, तो जरूरी नही कि वो देखेगा, सुनेगा और सोचेगा कि प्रभु ने उसे संदेश दिया है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: ओ, नही, ठीक है, यही कारण है कि बदलाव के दिमागी झटके को स्वीकार न करें, मैं इसकी कोई चिन्ता नही करता, मैंने केन्ट की बातों को ध्यान से पढ़ा है/

डॉ. गैरी हैबरमास: आप हिम्मत हार रहे हैं?

डॉ. एन्थनी फ्लू: नही, मैं ये बात उठाना चाहता हूँ, कि ये बात क्या थी जिसे सच में पौलुस ने देखा था/ उसने सोचा कि उसने जी उठे मसीह को देखा है, लेकिन वहां देखने के लिए क्या था? और उसके साथियों ने जी उठे मसीह या और कुछ भी नही देखा,याने यहाँ पौलुस बहुत ही महत्वपूर्ण बदलाव का अनुभव पा रहा था/

डॉ. गैरी हैबरमास: यदि आप प्रेरितों में से ये वचन लेते हैं,प्रेरित 9:22 और 26, उन्होंने ज्योति देखी, उन्होंने ज्योति देखी, वो सब अपने घुटनों पर आ गए, उन्होंने आवाज़ सुनी लेकिन नही जान पाए कि वो क्या कह रही है/ याने मैं नही चाहता कि लोग ये विचार ले कि मैं आपके साथ सहमत हूँ कि वो वहां खड़े और उन्होंने कुछ नही देखा, उन्होंने ज्योति देखी, और आवाज़ सुनी, वो जमीन पर गिर गए, ये स्पष्ट है कि उन पर भी इसका

प्रभाव पड़ा था, जो कि निश्चय ही बदलाव के झटके के लिए समय होगी, क्योंकि यदि पौलुस को दिमागी झटका लगा था, तो कैसे उसके साथी जमीन पर गिर रहे थे, ज्योति देख और आवाज़ सुन रहे थे?

डॉ. एन्थनी फ्लू: ठीक है, ठीक है, मैंने कभी दावा नही किया कि मैं सयकोलोजिक्ल एक्सपर्ट होने का दावा नही किया है/ बदलाव का दिमागी झटका नही था, लेकिन फिर भी, कुछ तो होना था कि जीवन बदल जाए...

डॉ. गैरी हैबरमास: बिलकुल/

डॉ. एन्थनी फ्लू: और अवश्य ही मैं इसके साथ पूरी तरह से सहमत हूँ, ये पूरी तरह से बेचिदा है, शायद वहां पर कुछ होगा जिसे टेलीविजन के कैमरा रेकॉर्ड करते, हमारे पास ये सोचने के लिए कोई कारण नही है, जानते हैं, बस यही है कि हम सोचते हैं और विश्वास करते हैं कि परमेश्वर पौलुस से बात करना चाहता था/

डॉ. गैरी हैबरमास: यहाँ फिलिप्पियों3 है, यहाँ फिलिप्पियों 3 में 3 बहस हैं, पौलुस कहता है कि ये शारीरिक देह है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी ठीक है, उसने ये सोचा/

डॉ. गैरी हैबरमास: ठीक है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: ये बात कि उसने सोचा, ये कारण नही है, कि निर्णय लेकर कहे कि वो वहां था/

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, लेकिन, मेरा मतलब जब आप कहते हैं कि पौलुस ने यीशु के भूत जैसे प्रकटीकरण के बारे में देखा/ पौलुस बहुत स्पष्ट है कि जो प्रकट हुआ वो शरीर है, तो उसने सोचा होगा कि उसने देह को देखा, देखिए अब भी, प्रेरितों के लेखे से, अभी भी उसके साथी हैं, गिर रहे हैं, ज्योति देखते हैं, और आवाज़ सुनते हैं, और ये बदलाव का दिमागी झटका नही/ क्या आप दिमागी झटके का इनकार करते हैं?

डॉ. एन्थनी फ्लू: ठीक है, मैं ख़ुशी से इसका इनकार करता हूँ, मैं कभी इसके समर्पित नही रहा, मैं इसी बात पर जोर देना चाहता हूँ, कि वहां देखे जाने के लिए कुछ भी नही था/ उसने इसे कैसे पाया, जानते हैं ये तो सयकोलोजिस्ट का काम है, और धन्यवाद कि मैं वो नही हूँ/

डॉ. गैरी हैबरमास: यदि ये बदलाव का दिमागी झटका नही/ अब मैं सवाल बदलकर कहूँगा, यदि ये बदलाव का झटका नही है, और उसने यीशु को नही देखा, तो फिर उसने और उसके साथियों ने क्या देखा? वो क्यों एक साथ निचे गिरे? दमिश्क के मार्ग पर क्या हुआ था? यदि ए भ्रम नही है, और पुनरुत्थान नही है, तो फिर क्या है?

डॉ. एन्थनी फ्लू: यदि ये उसके साथियों को दिखाई नही दिया, तो ये शारीरिक देह नही हो सकती है/

डॉ. गैरी हैबरमास: किसने कहा कि ये साथियों को नही दिखाई दी, मतलब उन्होंने ज्योति देखी, वो निचे गिरते हैं और आवाज़ सुनी/

डॉ. एन्थनी फ्लू: ये सब तो हम कहते हैं/

डॉ. गैरी हैबरमास: चलिए इस तरह कहूँ/ फिलोसोफिक्ली, जैसे आप जानते हैं, अलग होना, दो चीज़ें, एक ही समय में एक ही जगह पर नही हो सकती, हमें बताया गया कि उन्होंने क्या देखा, जो नही देखा वो नही बताया

गया/ हो सकता है कि शारीरिक देह वहां पर खड़ी हो, हमें नही बताया गया कि शरीर नही था, वचन में कही नही कहा कि कोई देह नही थी,और फिलिप्पियों 3 में पौलुस कहता है, वो देह है, हमारे पास केवल पौलुस का डेटा है, उसके दोस्तों का नही/

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी/

डॉ. गैरी हैबरमास: केवल पौलुस का है, और पौलुस कहता है कि वो शारीरिक देह थी, याने देखिए यही समस्या है, 4 तथ्यों में से एक है, पौलुस ने विश्वास किया कि उसने यीशु के प्रकटीकरण को देखा है/ ये भ्रम नही है, तो फिर ये क्या है?

डॉ. एन्थनी फ्लू: लेकिन देखिए यही तो बात है जो सुसमाचार के सब लोगों ने देखी थी, उन्होंने सोचा कि वो जी उठे मसीह को देख रहे हैं, जानते हैं/ केवल एक ही केस है जो सच में उसे छूकर देखना चाहते थे कि उसे महसूस कर सकते या नही, ऐसे तो दूसरों की तुलना में बहुत कम लोग थे/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, यही पर रुकते हैं और उस छोटे समूह के बारे में चर्चा करते हैं, वापस आने पर,आप जिनके बारे में कह रहे हैं उनके बारे में क्या, उन्हें क्या हुआ? हम इस पर चर्चा करेंगे/

ब्रेक/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, हम लौट आए हैं और चर्चा कर रहे हैं डॉ. एन्थनी फ्लू से, जिन्हें संसार के सबसे बड़े फिलोसोफीक्ल नास्तिक माना जाता है, और डॉ. गैरी हैबरमास, जो विख्यात मसीही फिलोसोफिर और इतिहासकार हैं, इन्हें यीशु के जी उठने के सबूतों के बारे में एक्सपर्ट माना जाता है/ और हम देख रहे हैं, हम चर्चा कर रहे हैं कि क्या सच में यीशु मुर्दों में से जी उठा है/ यदि ऐसा है तो वो किस तरह की देह में जी उठा? अब हम यही देख रहे हैं, चेलों ने क्या देखा? और हमने पौलुस के बारे में चर्चा की/ अभी भी पतरस बाकि है, याकूब है, थोमा है, स्त्रियाँ हैं,और दूसरे हैं जिनके बारे में बताया है/ आप कहाँ से शुरू करना चाहेंगे?

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, इन्होने बताया है कि स्त्रियों ने यीशु को स्पर्श किया, मत्ती में, युहन्ना में मरियम ने यीशु को स्पर्श किया था, और थोमा अवश्य ही उस समय उसने नही छुआ, लेकिन बाद में, इगनेशियस कहते हैं कि उसने छुआ/ मैं यही सवाल पूछता हूँ, क्या चेले भ्रम के लिए सही व्यक्ति थे, या उन्होंने उ से स्पर्श किया जो यीशु जैसे दिखता था? यहाँ फिर से भ्रम की थेयरी है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: खैर, ये ऐसे केस हैं, जहाँ संवेदनशीलता का दावा आता है, इस पूरी केस में बहुत कम लोग थे/

डॉ. गैरी हैबरमास: समय और जगह के विचार से देखे तो किसी को कितने बार छूने की जरूरत होती है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: बहुत ज्यादा नही/

डॉ. गैरी हैबरमास: एक बार छूने से पता चलेगा/

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी, हाँ, लेकिन बात तो ये है, यहाँ ये लोग कम हैं, इस केस में वे लोग हैं, जो कहते हैं कि जी उठे यीशु को देखा, और ये भी बताया जाता है कि उन्होंने उसे जांचने के लिए कुछ किया, कि देखे जाने के लिए क्या कोई चीज़ है/

डॉ. गैरी हैबरमास: अवश्य ही, जरूरी नही था कि कोई यीशु को स्पर्श कर देखे/

डॉ. एन्थनी फ्लू: ओ, नही/

डॉ. गैरी हैबरमास: अभी आप इस कमरे में बैठे हैं और हमने आपको स्पर्श नही किया/

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी, हाँ/

डॉ. गैरी हैबरमास: याने यहाँ स्त्रियों ने यीशु को छुआ, मरियम ने यीशु को छुआ, थोमा को छूने का मौका दिया गया, सुसमाचार में देखते हैं, लेकिन पौलुस के लेखे में भी, फिर से फिलिप्पियों 3, पौलुस का विचार था कि यीशु शरीरिक रूप में प्रकट हुआ, पौलुस ये मानता है, याने मुझे दिखाई देता है, फिर ये यहाँ मुश्किल की दो बातें हैं, चेलों के साथ, कि एक तो उन्हें भ्रम हुआ, क्योंकि उन्होंने विश्वास किया कि उन्होंने कुछ देखा है,केन्ट कहते हैं कि हैबरमास के बातें ठीक हैं, लेकिन मैं सोचता हूँ कि ये भ्रम था, क्या आप चेलों को भ्रम हुआ से सहमत हैं?

डॉ. एन्थनी फ्लू: मैं इसके बारे में निश्चित नही कि कौनसे लेबल उपयोग होते हैं, मेरे लिए मुश्किल बात ये दिखाई देती है, कि क्या वहां कुछ कि दिखे या भ्रम हो या जो भी हो/ चाहे इसे भ्रम कहे या दर्शन कहे या कुछ भी कहे, मुद्दा तो ये है कि वहां देखे जाने के लिए क्या कुछ था या नही/ और मुझे लगता है कि ये सबूत तो बहुत कमजोर हैं/

डॉ. गैरी हैबरमास: चेले, पौलुस और दूसरों से कह रहे थे,उनके अनुभव थे और वो विश्वास करते थे कि ये जी उठे यीशु के प्रकटीकरण हैं/

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी/

डॉ. गैरी हैबरमास: ठीक है, यहाँ कब्र खाली है, याने कुछ शारीरिक हो रहा था, केवल कुछ वचन बताते हैं कि उन्होंने यीशु को स्पर्श किया, ये सब इस दिशा की और दिखाते हैं कि वहां शरीर था, वो इस व्यक्ति को जानते थे, वो तीन साल उसके साथ थे, अच्छा दोस्त था, कुछ केस में रिश्तेदार था, वो भाई था, किसी का बेटा था, अब हम यहाँ से कहाँ जाए? आप भी भी भ्रम को मान रहे हैं, ठीक है?

डॉ. एन्थनी फ्लू: देखिए ऐसा कहा गया है उदाहरण के लिए, वो उसके साथ कुछ समय चल रहे थे और नही जाना कि ये जी उठा यीशु है/

डॉ. गैरी हैबरमास: ये अच्छा पॉइंट है, 15 साल से आपके साथ मुलाक़ात नही हुई थी, और मैंने कल आपको होटल में पहचाना, लेकिन बदलाव आए थे, और 15 साल में मुझ में भी बदलाव आए, यदि जी उठे शरीर में थोड़े बहुत बदलाव आए हैं, मैं सोचता हूँ कि आए थे, तो हमें यही चाहिए, जानते हैं किसी को देखते और फिर देखकर कहते हैं क्या ये आप हैं? मैं सोचता हूँ कि ये बात सही है कि पौलुस आत्मिक देह कहता है, मतलब ये असली देह है, मैं सोचता हूँ कि ये समय और जगह लेती है, स्पर्श कर सकते हैं, लेकिन बदलाव आए थे, मैं सोचता हूँ कि हो सकता है कि वो थोडा अलग दिख रहा होगा/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: मैं एक बात कहना चाहता हूँ और मुझे ये अद्भुत लगता है, कि एक और दोष निकालनेवाले हैं, बहुत मुश्किल दोष निकालनेवाले, यीशु के जीवन काल में, उसका अपना भाई, जिसने एक समय ये जोर दिया कि यीशु को यरूशलेम जाना होगा और खुद मरना होगा, याने बहुत अजीब तरह से, और

फिर अचानक ये व्यक्ति यरूशलेम के चर्च का हेड हो जाता है/ अब उसने यीशु में विश्वास नही किया था, जब कि यीशु उस समय जीवित था, याकूब के साथ क्या हुआ था, टोनी?

डॉ. एन्थनी फ्लू: पता नही, ये जानने की मुझ से क्यों अपेक्षा की जाए? किस कारण किसी से अपेक्षा की जाए कि अनजाने तारीख को यरूशलेम में क्या हुआ था/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: लगता है जैसे कोर्ट में जाकर हैबरमास से कहना है, तुम्हारे **डॉ. एन्थनी फ्लू:** दस गवाहों के बिना तुम्हारे पास कुछ भी नही है हैबरमास/

जी, नही, मैं सोचता हूँ कि इनके पास बहुत कुछ है, मैं सोचता हूँ कि बहुत कुछ है, देखिए बहुत कम लोगों ने स्पष्ट रूप में बताया है, कि उन्होंने कुछ देखा और क्या वो वही है ये देखने के लिए कुछ कदम भी उठाने पड़े/ थोमा तो जिज्ञासा से भरा छोटा व्यक्ति था, जी उठे यीशु को देखनेवाले इन सब लोगों में/

डॉ. गैरी हैबरमास: आपको ये पसंद हैं, हैं ना?

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी, सच में, क्योंकि ये मुझे ऐसे लगते हैं कि ये वो सब करते हैं जो कोई भी दोष निकालनेवाला व्यक्ति है, वो इसे उसी समय करेगा/

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, मैं सोचता हूँ कि जॉन का कहना है कि ये पुनरुत्थान के सबूतों का अद्‌भुत और अलग अलग स्वभाव है, याने स्त्रियों का समूह है, फिर अकेली स्त्री है, मरियम मगदलीनी, फिर पुरुषों का समूह है, फिर अकेला पुरुष है, याकूब, पहला कुरिन्थियो 15:7 में याकूब के बारे में पौलुस की गवाही है, याकूब अब दोष निकालनेवाला नही रहा, वो विश्वास करता है कि उसने यीशु को देखा, और पौलुस है और खाली कब्र है/

और एक के बाद एक ऐसी बातें हैं, और मैं सोचता हूँ कि मसीही विश्वासी सोचते हैं, हमारे पास बहुत से सबूत है, देखिए इस समय दोष निकालनेवाले कहते हैं, तो इसके बारे में क्या? तो कहिए पौलुस के बारे में क्या? याकूब के बारे में क्या? ये सबूत अलग अलग आयाम से आते हैं, आप इतिहासकार के रूप में जानते हैं, इतिहासकार यही चाहते हैं, इतिहासकार चाहते हैं कि बहुत से सबूत उनके पास अलग अलग एन्गल्स से आएं, दुश्मनों से, विश्वासियों से, यहाँ दो दोष निकालनेवाले थे जो शत्रु थे, यहाँ पर यहूदी मानते हैं कि कब्र खाली थी, और स्त्रियाँ जिन्हें अच्छे गवाह नही माना जाता था,उन्होंने यीशु की कब्र को देखा उसे पकड़ा था, मतलब यहाँ पर बहुतसा डेटा है, और मैं सोचता हूँ कि इसी कारण मसीही लोग विश्वास करते हैं,क्योंकि यही मसीही विश्वास में मुख्य बात है/

डॉ. एन्थनी फ्लू: जी, मैं सोचता हूँ कि इस बात को फिर देखना योग्य होगा जो मैंने पहले कही थी, कि आप व्यवहारिक रूप में इन बातों को कैसे प्रतिउत्तर देते हैं, ये इस पर आधारित होता है कि आपका पहला विश्वास क्या था, यदि आपका पहला विश्वास यहूदी विश्वास था, जो मसीहा के आने पर विश्वास करते थे, और ये सब, जो मूसा की आस्था की परंपरा से आई है, तब मुझे ये दिखता है, कि इस तरह की बातें बहुत ही आसानी से आती है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: लेकिन उन लोगों के लिए ये बात सहमत करनेवाली नही थी, कि ये खुद को परमेश्वर का पुत्र कहता था/ अब केन्ट कहते हैं कि पौलुस ने नए नियम में कही नही कहा कि यीशु परमेश्वर था/ मैं हैबरमास से पूछता हूँ, दोष निकालनेवाले कहते हैं, मुझे दिखाइए कि कहाँ यीशु ने परमेश्वर होने का दावा किया? आपके पास 5 ऐसे डेटा हैं जिसे आप देखकर बता सकते हैं कि यीशु ने कहा है वो परमेश्वर का पुत्र है, मनुष्य का पुत्र है, 5 जगह पर, क्या आप कुछ कहेंगे?

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, मैं सोचता हूँ कि दोनों हैं याने पौलुस ने बहुत ही स्पष्ट कहा है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, लेकिन मैं यहाँ कहूँगा, हमारे पास पौलुस के भी पहले का डेटा है/ आज सबसे बड़ा सवाल है, मसीहा होने के बारे में यीशु के अवचेतन मन में क्या था, या आज पश्चिम में इस तरह कहते हैं, आपको क्या लगता है कि वो कौन था? और यहाँ पर दोष निकालनेवाले क्या करते हैं, उन्हें सुसमाचार पसंद नही है,जैसे वो पौलुस को पसन्द करते हैं, जैसे हमने कईबार कहा है, पौलुस के सबूत सबसे उत्तम हैं, लेकिन उन्हें सुसमाचार के भाग पसन्द हैं, जो कुछ खास क्रयाटेरिया पूरा करते हैं, और उन में से बहुत से वचन में, आप देखते हैं कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया है या मनुष्य का पुत्र होने का, मैं फुट नोट के रूप में कहूँगा, मनुष्य का पुत्र यीशु का अपना पसन्दीदा शीर्षक था, लेकिन ये उसके उपयोग के लिए, लिया गया था, ये दानियल 7:13-14 से लिया गया था, वो दानियल 7:13-14 कोट करता है, दो बार, जब वो महा-याजक के सामने खड़े होता है/

अब, ये एक उदाहरण है, हमारे पास उसके मरने का कारण होना चाहिए, रोमी लोगों ने जो किया उसे क्यों करना था? और यहूदी क्यों चाहते थे कि रोमी इसे करे? मरकुस 14:61-64 में,महा-याजक कहता है, क्या तुम उस परमधन्य का पुत्र मसीह है? अब ध्यान दिजिए कि सवाल था कि क्या तुम परमेश्वर के पुत्र हो? यीशु ने ग्रीक में जवाब दिया, एगो एल्मी, पहला जवाब है, मैं हूँ, दूसरी बात कि वो परमेश्वर का पुत्र बदलकर, परमेश्वर का पुत्र बदलकर मनुष्य का पुत्र जवाब देता है, कहता है कि तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दाहिनी ओर बैठे और बादलों के साथ आते देखोंगे/ वो तुम्हारा न्याय करेगा/

अब महा-याजक को ये कहना चाहिए, ओ, नही तुम ने मनुष्य का पुत्र कहा था, मैंने मनुष्य का पुत्र कहा था, नही वो जानता था, कि क्या है, जब यीशु ने कहा मनुष्य का पुत्र, ये ईश्वरीय होने का दावा था, और खैर ये वाक्य की बादलों के साथ आएगा, ये वाक्य वचनों में कईबार आता है, और ये हमेशा परमेश्वर के बारे में है/ याने यीशु कहता है कि हाँ मैं हूँ, परमेश्वर का पुत्र, वो कहता है कि मैं मनुष्य का पुत्र हूँ, न्याय में मैं आऊंगा, और उस समय महा-याजक ने कहा कि बाकि सारे गवाह घर जा सकते हैं, हमने इसे पकड़ लिया, इसने निन्दा की है, याने ये एक उदाहरण है/

और साथ क्यों संत भी हैं, इनके वाक्य मत्ती और लूका में हैं, लेकिन मरकुस में नही, चाहे आप इसे कुछ भी कहे, ये सुसमाचार में हैं, इस एक वचन में, मत्ती 11:27 में, जो लूका से मिलता है, कोई पुत्र को नही जानता, केवल पिता, और कोई पिता को नही जानता, केवल पुत्र, और वः जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे/ वो मनुष्य का पुत्र होने का दावा करता है, और दोष निकालनेवाले को इसे समझाना मुश्किल होता है, फिर से ये सिद्धान्त हैं जिसे इतिहासकार शर्मिंदगी का सिद्धान्त कहते हैं, यीशु कहता है उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नही जानता, न पुत्र, परन्तु केवल पिता/

अब मनुष्य का पुत्र होने का दावा करना, तो क्यों कहे कि कुछ नही जानते हैं? ये शर्मिन्दा करना है, एक ब्रिटिश थियोलोजियन ने कहा, यदि चर्च ये कहने की कोशिश करे कि यीशु मनुष्य का पुत्र होने के बारे में कह रहा था, तो बस कहना था, और उसके आने के समय की समस्या नही बतानी थी, लेकिन इस वचन में वो खुद को मनुष्य का पुत्र कहता है/

ये ऐसे कुछ वाक्य हैं जहाँ यीशु ने खुद के ईश्वरत्व के बारे में सोचा, और पौलुस स्पष्ट रूप में, यीशु को ईश्वर कहता है/ वो कुछ जगह उसे परमेश्वर कहता है/ और उसके दो खास शीर्षक हैं, प्रभू और मसीह, चलिए जल्दी से इसे देखे, प्रभु, सेप्टयुजन्ट में, पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में, प्रभु ये शब्द यहोवा के लिए है, याने पौलुस जो सेप्टयुजन्ट में लिखता है, उसे ये जानना होगा, और वो यीशु को बार-बार प्रभु कहता है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: हमारे पास थोडा समय है, इसका सारांश बताइए, अगले सेगमेन्ट में टोनी से पूछेंगे, इसे पूरी बात के बारे में जिस पर चर्चा कर रहे हैं, क्या दोष निकालनेवाले को सहमत करने के लिए सबूत काफी

हैं? ठीक हैं, लेकिन हम इसका सारांश देखेंगे, जिस में हम अब हैं, मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, यदि वो वहां है और पुनरुत्थान है, यदि इन दोनों को एक साथ जोड़े तो क्या मिलेगा?

डॉ. गैरी हैबरमास: जी, हाँ, ऐसे कुछ वचन हैं जिन्हें दोष निकालनेवाले भी स्वीकार करते हैं, यीशु खुद को परमेश्वर का पुत्र कहता है/ और कुछ खास वचनों में वो खुद को मनुष्य का पुत्र कहता है, पौलुस शुरू की गवाही में यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहता है, वो उसे प्रभु कहता है, मसीह कहता है, देखिए रोमियों, 1:3 और 4 में, पौलुस कहता है कि पुनरुत्थान इन सारी बातों को साबित करता है, यही मुद्दा कुछ समय पहले उठा था, जी नए नियम में जी उठना, परमेश्वर की सहमती है, छाप है, यीशु जो सोचता था, उसकी सहमती के लिए/ जी, 1985 के डिबेट में, टोनी ने कहा था, कि यदि यीशु मुर्दों में से जी उठा है, तो ये सबसे अच्छा सबूत है कि वो इब्राहम, इसहाक और इस्राएल का परमेश्वर है, और ये कोट से मिलता है, ये पुनरुत्थान पर विश्वास नही करते, लेकिन मैं कहता हूँ, यदि पुनरुत्थान हुआ है तभी लोग मानते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, क्योंकि केवल परमेश्वर है, हाँ परमेश्वर ही मुर्दों को जिला सकता है/ यदि उसने इसे जिलाया, तो झूठ नही कह सकता/ उसने खुद के बारे में जो कहा वो सही है/

डॉ. जॉन एन्करबर्ग: ठीक है, हम यहाँ एक ब्रेक लेंगे और अगले सेगमेन्ट में वापस आकर हम चर्चा करेंगे, वो कौनसी बात है जिसे दोष निकालनेवाले सहमत हो, दूसरे शब्दों में, उसके वचनों से सबूत लेते जाए, लेते जाए कि यीशु पर विश्वास करने लगे, ठीक है? अगले प्रोग्राम में इस पर चर्चा करेंगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् ध्द् ठ्ठड़ड़ड्ढद्रध्र ख्ड्ढद्मद्धद्म क्ण्द्धत्ज्ञ्ध" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्.दृद्धढ़

@JAshow.org

क्दृद्रन्द्धत्ढ़ण्ध् 2015 ऋच्ड्ढक्ष्